पीएच.डी पूर्व पंजीकरण के लिए प्रस्तावित सारांश

समाजीकरण के लैंगिक प्रतिमानों का भावनात्मक बुद्धिमत्ता से संबंध और इसका सामाजिक एवं पारिवारिक संरचना पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रस्तुत
विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची

2025

पीएच.डी मार्गदर्शिका
डॉ दीपाली अपराजिता डुंगडुंग
सहायक प्रोफेसर
समाजशास्त्र विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची

प्रस्तावित
प्रीति कुमारी
समाजशास्त्र विभाग
रांची विश्वविद्यालय, रांची

समाजीकरण के लैंगिक प्रतिमानों का भावनात्मक बुद्धिमत्ता से संबंध और इसका सामाजिक एवं पारिवारिक संरचना पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

शोध विषय की अद्यतन स्थिति

"मानव एक सामाजिक प्राणी है।"

उपरोक्त कथन मानव के जीवन के सार की भांति है, जो मानव के अस्तित्व के स्वरुप का वर्णन करता है । मानव शिशु जब जन्म लेता है तो वह महज एक प्राणीशास्त्रीय इकाई होता है । उसमें किसी प्रकार के सामाजिक गुण नहीं होते है, वह समाज के तमाम पक्षों से अनभिज्ञ होता है। समाज की अपने प्रति अपेक्षाओ का ज्ञान व्यक्ति समाज से ही लेता है।

चूंकि समाज की अपेक्षाएँ स्त्री व पुरुष दोनों से अलग– अलग होती हैं अतः अपेक्षाओ का ज्ञान एवं समाजीकरण का तरीका लिंग के अनुसार अलग अलग होता है। ये तरीके स्त्री एवं पुरुष दोनों में भावनाओं के को समझने, प्रबंधन करने, एवं व्यक्त करने के तरीकों को प्रभावित करते हैं। यद्यपि समाजीकरण जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है फिर भी जीवन के प्रथम 20–25 वर्ष सीखी गई शैली को आवश्यकतानुसार आगे परिवर्तित कर पाना कठिन होता है।

रोमानेली, (2022) ने शोध में पाया है कि पुरुषों को उनकी भावनाओं को के दमन के लिए इस तरह तैयार कर दिया जाता है कि वे अति आवश्यक होने पर भी अपनी भावनाएँ एवं तकलीफ अपने आस–पास के लोगों के साथ नहीं बांट पाते है । इस स्थिति को नोर्मेटिव मेल एलेक्सिथिमिया कहा जाता है ।

इस तरह की स्थिति और भी जटिल हो जाती है जब भावनात्मक एवं मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में पेशेवर लोगो से सहायता भी नहीं ले पाते हैं क्योंकि मानसिक स्वास्थ्य को लेकर समाज में कई टैबू (वर्जना) प्रचलित है। (डाइनबर्ग, 2008) ने इस तथ्य के संदर्भ में एक शोध रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसमें उन्होंने बताया सामाजिक वर्जनाएं मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में पेशेवर लोगों की सहायता लेने में रुकावट बनती है।

इस प्रकार समाज के विभिन्न प्रतिमान मानसिक स्वस्थ्य भावनात्मक बुद्धिमन्ता को प्रभावित करते हैं। ये ही दमन घरेलू हिंसा, अप्रकार्यात्मक परिवार आदि को उत्पन्न करने में सहायता देता है। डटॉन, (2004) के अनुसार भावनात्मक बुद्धिमत्ता में कमी का सीधा संबंध घरेलू हिंसा से होता है। यह भी देखा गया है कि दुव्यवहार करने वाले पुरुष भावनात्मक अभिव्यक्ति में कमजोर होते हैं (रोसेनबाम एवं ओ'लैरी', 1981) और क्योंकि उनमें अपनी आवश्यकताओं को व्यक्त करने क लिए, आवश्यक कौशल और आत्मविश्वास की कमी होती है, वे चाहते हैं कि वे आवश्यकताओ की पूर्ति धमकी एवं आक्रामकता के उपयोग से कर ले (फैनल्क, 1977)

यह शोध इसी ओर अनुसंधान में सहायता करेगा कि क्या वास्तव में समाजीकरण एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता में संबंध है। यदि हां तो इस संबंध की घनिष्टता क्या है। इन आयामों को समझते हुए हम समाज में लैंगिक समाजीकरण का जीवन पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ रहा है जानने का प्रयास करेंगे साथ ही इनमें क्या सुधार किए जा सकते हैं इस पक्ष का अध्ययन करेंगे।

<u>साहित्य की समीक्षा</u>

संबंधित क्षेतों में उपलब्ध अध्ययनों को निम्नलिखित के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है –

1) पितृसत्ता से संबंधित अध्ययन

2) समाजीकरण से संबंधित अध्ययन

3) भावनात्मक बुद्धिमत्ता से संबंधित अध्ययन

<u>1. समाजीकरण से संबंधित अध्ययन</u>

जी. एच. मीड (1937) ने समाजीकरण के अपने सिद्वात में बताते हैं व्यक्ति समाज की अपेक्षाओं के अनुरूप व्यवहार करना सीखता है। वह समाज से लैंगिक अपेक्षाओं को सीखता है । आत्मसात करता है और व्यवहार में उतारता है । यह प्रक्रिया जन्म के कुछ समय बाद से ही प्रारंभ हो जाती है।

टालकोट पारसंस ने लिंग के अनुसार समाज में स्त्री एवं पुरुषों की अलग–अलग भूमिका बताई है । जो समाज के उचित क्रार्यान्वयन के लिए आवश्यक है। अभिव्यंजक भूमिकाएँ जैसे भावात्मक, अभिव्यक्ति देखभाल, प्रेम आदि स्त्रियों की भूमिकाएँ हैं। जबकि साधक भूमिकाएं पुरुषों की है । जैसे– धन अर्जन, एवं अन्य आर्थिक कार्य । यह सिद्धांत भी समाज में स्त्री पुरुषों की भूमिका एक अपेक्षाओं को दर्शाने में सहायक है।

अवनी अमीन, अन्ना केगेस्टेन, इमैनुएल अदेवायो एवं वेंकटरमन चंद्र (2018) ने किशोरों के समाजीकरण में लैंगिक असमानता की चर्चा की है। वे बताते है लड़के किशोरावस्था में जैसे जैसे प्रवेश करते है उनमें पारस्परिक हिंसा, चोटे, यौनरोग आत्महत्या मृत्यु दर, आदि की संभावना बढ़ती है जो उनके आजीवन स्वास्थ्य को अकार देते हैं। किशोर लड़कों में नशे में पड़ने की संभावना भी अधिक होती है। लैंगिक समाजीकरण बचपन में जल्दी प्रारंभ हो जाता है 10 से 14 वर्ष की आयु लिंग दृष्टिकोण को आकार देने में महत्वपूर्ण है किशोरावस्था में लिंग संबंधित नई एवं तीव्र अपेक्षाएँ लाती हैं। इस अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि युवा किशोर में रूढ़िवादी लिंग मानदंडों का समर्थन आम बात है। लड़के एव लड़कियां लिंग के अनुसार अलग अलग दबावों और स्रोतों का अनुभव करते है। ये मानदंड पुरुषों में जहां दर्द के प्रति सहनशीलता, लड़ाई में शामिल होना, खेलों में प्रतिस्पर्धा, आर्थिक स्वतंत्रता कमजोर न दिखना, मदद न लेना, कई लड़कियों के साथ संबंध रखना, रिश्तों में लड़कियां पर

नियंत्रण रखना आदि शामिल है । इसी अध्ययन में आगे बताया गया है कि किशोर लड़के लड़कियों की तुलना में असमान लिंग मानदंडों का अधिक समर्थन करते है।

नीतू एः जॉन, क्रिस्टेन् स्टॉवेन्यू, समांथा रिट्टर, जैकी एडमीडस, एवं निकोल वालविन (2017) ने यूनिसेफ के इनोसेंटी के समीक्षा पत्र में किशोरावस्था में समाजीकरण का वर्णन भिन्न एवं मध्य आय वाले देशों के संदर्भ में किया है। ज्ञात हो कि भारत एक मध्यम आय वाला देश है। लिंग समाजीकरण विभिन्न प्रक्रियाओं का परिणाम है, जिसने शिक्षा, श्रम, सामाजिक राजनीतिक भागीदारी आदि शामिल है। निम्न एवं मध्यम आय वाले देशों में बच्चे बहुत नजदीक से हिंसा देखते हैं और उससे प्रभावित होते हैं। इन्हीं आदर्शों के परिणामस्वरूप पुरुषत्व के पहचान के अनुरूप उन्हें शक्ति एवं श्रेष्ठता व प्रतिष्ठा का प्रदर्शन करना पड़ता है। रिकार्डो, बार्कर, पुलरविट्ज एवं रोचा (2006) के अनुसार उपरोक्त व्यवहार का प्रदर्शन महत्वपूर्ण है। है। साथ ही अपने यौन कारनामों के लिए शेखी बघारना, तथा यौन अनुभव लेना उत्तम गया है। वही स्त्रियों के संदर्भ में यौन पवित्रता, भोलापन आदि को बढ़ावा दिया जाता है।

एरकेन एलिक उलु, सेमरा उकार (2021) ने अध्ययन में यह निर्धारित किया लिंग भूमिकाएं, आत्म सम्मान और व्यक्तित्व विवाह के बारे में पुरुषों एवं महिलाओं के दृष्टिकोण की अपेक्षाओं की भविष्यवाणी करते हैं या नहीं। अध्ययन के प्रतिदर्श में 491 लोग जिननें 345 महिलाएँ एवं 146 पुरुष शामिल हैं। सभी के पास कॉलेज की डिग्री है। इस शोध में लिंग निर्माण स्केल, रोसेनबर्ग आत्म सम्मानस्केल, साथी चयन स्केल एवं समाजों ट्रैपी, स्वायत्तता स्केल का उपयोग किया । मल्टीपल रिग्रेशन एनालिसिस (स्टेपवाइज मेथड) विधि का उपयोग करके किया गया था। महिलाओं एवं पुरुषों के विश्लेषण में सभी चर शामिल हैं। लिंग भूमिका चर महिलाओं की विवाह अपेक्षा के महत्वपूर्ण निर्धारक है। पुरुषों के विवाह के भविष्य निर्धारक समाजोट्रॉपि चर है। निष्कर्षों में देखा गया कि महिलाओं एवं पुरुषों में विवाह निर्धारक एक दूसरे से भिन्न है।

2. लैंगिक समाजीकरण के प्रतिमानों से संबंधित अध्ययन

जुडिथ बटलर जेंडर ट्रबल (1999) में जेंडर परफॉर्मेटिविटी के सिद्धांत से बताती है कि जंडर या सामाजिक लिंग एक पहचान के रूप में परिवर्तनशील है। यह एक सामाजिक निर्माण है। यह लिंग पहचान की वास्तविक अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि सामाजिक अपेक्षाओं को पूर्व करने का प्रदर्शन है। सामाजिक संरचनाओं के भीतर प्रतिरोध के कार्यों के माध्यम से लैंगिक प्रदर्शन को विकृत या परिवर्तित कर पाना संभव है । जैसे – वस्त, बोलचाल, एवं व्यवहार के तरीको को केवल स्त्री या पुरुष होने से जोड़ा जाना।

गोकिला जी. कृष्णन अनधा अर्जुन, स्मृति (2020) पितृसत्तात्मक समाज में पुरुषों की समस्याओं पर आलेख लिखते हुए बताती हैं कि पुरुषवादी पितृसत्तात्मक समाज में पुरुषों का वर्चस्व होते हुए भी उनकी समस्याओ के बारे में अक्सर ही बात नहीं किया जाता । ऐसा मान लिया जाता है कि पुरुषों पर अत्याचार, शाषण व दुर्व्यवहार नहीं हो सकता । पुरुष इस विचार के कारण अपनी समस्या खुलकर सामने नहीं रखते। परिणामस्वरूप पुरुषों और उनके समस्याओं के लिए कोई कानून भी नहीं है । वे अपनी बाते रखने में हीनता महसूस करते है । इसके

परिणामस्वरूप पुरुषों में मानसिक समस्या, अवसाद, चिड़चिड़ापन बढ़ जाता है और इससे पुरुषों में मादक द्रव्यों के सेवन में भी वृद्धि होती है ।

मयंक गुप्ता, जयाकृष्णा एस. मदाबुशी एवं निहित गुप्ता (2003) अपने लेख में बताते हैं कि पितृसत्ता को सदैव ही नारी के लिए एक शोषणकारी व्यवस्था के रूप में स्वीकारा गया है किंतु पुरुषों के मानसिक स्वास्थ्य बनाम लिंग पर पितृसत्ता के प्रभाव को बृद्ध रूप में अने देखा किया गया है। जहां कि पुरुषों को अपने. प्राकृतिक झुकाव के खिलाफ जाने तथा स्वीकार्य रूढ़ियों के अनुरूप आक्रामक रवैया अपनाते हुए अपने पुरुष होने का प्रमाण देते रहने हेतु बाध्य किया जाता है। यदि वह संवेदनशीलता, सहानुभूति आदि का प्रदर्शन करता है तो इसे स्त्री सम्मत गुण मानते हुए अपने समूह में क्रूरता का सामना करना पड़ता है। परिणामस्तरूप वे अपने भावनाओं को दबाना सीख जाते हैं। पुरुषों के औसत जीवनकाल में कमी के पीछ यह कारक सक्रिय भुमिका बहाल करता है।

ओक्टाविआना सेराविम, इन्द्रा योघंस किलिंग, मरनॉन येरलिंडा सी. मेग (2023) गुणात्मक शोध करते हुए पूर्व नुसा टेंगारा के विभिन्न जातीय समूहों का अध्ययन किया। वे बताते हैं जिन (1997 में बाद जन्म लेने वाले बच्चे) पितृसत्ता को विषाक्त पुरुषत्व का कारण मानते हैं। वे मानते हैं कि पितृसत्ता के पीढ़ी देर पीढ़ी चलने वाले प्रतिमान पुरुषों को भावनाएं आदि दबाने के लिए प्रेरित करते हैं।

3. भावनात्मक बुद्धिमत्ता का अध्ययन

गोलमैन (1998) ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता को आईक्यू से अधिक महत्व देते हुए बताया है कि दूसरो की भावनाओं को समझना, प्रतिपुष्टि प्राप्त करना, अपनी भावनाओं के नियंत्रण दूसरों के प्रति सहानुभूति आदि रखने के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता आवश्यक है। यह समय के साथ विकसित होती है इसे विद्यालय या कॉलेज से नहीं सीखा जा सकता। यह व्यक्ति में प्रबंधन एवं नेतृत्व के कौशल के लिए आवश्यक है।

एम. सांचेज – नुनेज, पाब्लो फर्नाडीज–बेरोकत, जुआन मोटेनेस एवं जॉस मिगुएल लैंटोर (2008) ने सलोवी स्किल मॉडल के दृष्टिकोण से भावनात्मक बुद्धिमना को शामिल करने वाले मुख्य कारकों के लिए पाए गए लिंग भेद को उचित ठहराने का प्रयत्न करता है। ऐसा करने के लिए माता–पिता द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले विभिन्न भावानात्मक एवं संवेगात्मक दक्षताओं के विभेदक विकास पर उनके प्रभाव को देखते हैं, इनकी तुलना प्राप्त शोध निष्कर्षों से करते हैं।

जोस एम. सालगुएरों, नतालियो एक्स्ट्रेमेरा, पाब्लो फर्नीडीज (2012) ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता को अवसाद से जुड़ा माना है। प्रतिभागी 620 छात्रों ने अवसाद सूची व भावनात्मक बुद्धिमत्ता का परिक्षण कि पूरा किया। परिणामो में भावनात्मक बुद्धिमत्ता में लैंगिक अंतर है। साथ ही, निम्न भावनात्मक बुद्धिमत्ता पुरुषों में उच्च अवसाद का कारण है। जबकि महिलाओं के साथ ऐसा नहीं है।

एग्नेटा एच. फिशर, मॉरिस्का ई. क्रेट और जोस्ट ब्रोकेन्स (2018) ने भावनाओं की पहचान करने में लैंगिक, अंतर पर विस्तृत अध्ययन किया है जहां महिलाओं को इस मामले में थोड़ा बेहतर माना गया है 5000 से अधिक सामुदायिक प्रतिदर्श पर आधारित शोध में भावनात्मक संवेदनशीलता की समझ के विश्लेषण में लिंग अंतर को समझने प्रयास किया गया। जहां शोध में पाया गया कि चेहरे के हाव भाव व सूक्ष्म भावनाओं को समझने में महिलाएँ पुरुषों की तुलना में बेहतर है।

मरजाना गुकेल, क्रिस्टोफर श लेगल, रॉबर्ट एल एंगल (2014) ने नौ देशों के 2067 व्यक्तियों के प्रतिदर्श का प्रयोग करते हुए भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर सांस्कृतिक प्रभावों का वर्णन करने का प्रयास कर किया है। चूंकि सांस्कृतिक आयामों का भावनात्मक बुद्धिमत्ता के भिन्न–भिन्न पक्षों पर भिन्न–भिन्न तरह का पड़ता है अतः विभिन्न राष्ट्र कर्मचारियों की आवश्कताओं को पूरा करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक विशिष्टता से तैयार कर सकते हैं। अतः हम कह सकते हैं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि मस्तिष्क की कार्यात्मक रचनाशीलता एवं भावनाओं के प्रति समझ को व्यापक रूप से प्रभावित करती है इसी कारण से समाजीकरण के दौरान सभी व्यक्ति संस्कृति सापेक्ष, ही भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करते हैं।

अनुसंधान की समस्या

प्रस्तावित अध्ययन का लक्ष्य समाजीकरण के लैंगिक प्रतिमानों का भावनात्मक बुद्धिमत्ता से संबंध तथा इसका सामाजिक एवं पारिवारिक संरचना पर प्रभावों का अध्ययन करना है। समाज के लैगिक समाजीकरण के प्रतिमान पुरुषों एवं स्त्रियों के लिए अलग–अलग होते हैं। ये प्रतिमान भावनात्मक बुद्धिमत्ता को प्रभातित करते हैं। जहां स्त्रियां भावनाओं को महत्व देती है, समझती हैं। पुरुषों के साथ यह संभव नहीं हो पाता। मानव की भावनाएँ ही उसे अन्य पशु प्रजाति से उन्हें अलग करती है। ऐसे में जहां महिला आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं उनकी परंपरागत भूमिका बदल रही है जबकि पुरुष पुरातन भूमिकाओं में फंस गए हैं। जब महिलाओं को भावनात्मक रूप से उपलब्ध पुरुषो की आवश्यकता है किंतु पुरानी समाजीकरण व्यबस्था इस क्षेत्र में पिछड़ रही है इससे समाज में विचलन की एक स्थिति उत्पन्न हुई है जो पारिवारिक संरचना में परिवर्तन का कारण बन रही है। इस विषय में एक सामाजिक अध्ययन की आवश्यकता उभर कर सामने आती है। जहां कि समाजीकरण के प्रतिमानों एवं भावनात्मक आवश्यकताओं के बीच के संबंधों को समझा जा सके और इस क्षेत्र में विस्तृत कार्यों से जागरूकता लाई जा सके।

उद्देश्य

- समाज में स्त्री एवं पुरुषो के समाजीकरण के भिन्न प्रतिमानों एवं व्यक्तित्व निर्माण के मनोवैज्ञानिक प्रभावों की जांच करना।

- समाज में पुरुषों के समाजीकरण एवं व्यक्तित्व निर्माण का उनके भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर पर प्रभावों की जांच करना।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, कार्यस्थलीय एवं निजी जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों की जांच करना ।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता की कमी एवं पारिवारिक संरचना में परिवर्तन के मध्य संबंधों की जांच करना ।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता की एवं लैंगिक भेदभाव के चक्र के मध्य संबंधों की जांच करना।

अभिप्रेरणा

महिला एवं पुरुष समाज रूप वाहन के दो पहियों के समान होते हैं । यदि दोनों समन्वय के साथ कार्य न करें तो समाज रूपी वाहन का सही तरीके से कार्य करना संभव नहीं हो पाएगा। किंतु वर्तमान परिदृश्य में देखा जाए तो जहां महिलाओं ने परंपरागत रूप से पुरुषों का प्रकार्य समझे जाने वाले क्षेत्र में अपनी पकड़ बना ली है और सशक्त हो रही है, वहीं पुरुषों का प्रकार्य समझे जाने वाले क्षेत्र अर्थात घर परिवार एवं भावनाओं के प्रति समझ एवं बुद्धिमत्ता विकसित करने में उतनी उत्तम साझेदारी नहीं दिखाई है।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं भावनात्मक परिपक्वता का विकास जो कि निजी जीवन के लिए आवश्यक है पुरुष एवं पुरुष प्रधान समाज यहा विशेष रूप से पिछड़ रहे है। इस कारण महिलाओं में विवाह एवं परिवार प्रति अरुचि अधिक दिखायी देती है। इसे हम 'पितृसत्तात्मक विलंबना कह सकते हैं। जहां पुरुष प्रधान समाज के प्रतिमान एवं समाजीकरण का लैंगिक स्वरुप स्त्री एवं पुरुष के मध्य समन्वय में बाधा उत्पन्न कर रहा है। पुरुष पिछड़ रहे है, क्योंकि महिलाएं सशक्त है किंतु प‚रुष यह नहीं सीख पा रहे है कि सशक्त महिलाओं के साथ कैसे रहना है। पुरुषों में इससे नशापान आदि की समस्या बढ़ रही है, परिवारिक संरचना बदल रही ह, विवाह विच्छेद हों रहे है। इस अध्ययन के माध्यम से पितृसत्तात्मक विलंबना को समझते हुए पुरुषों में भावनात्मक बुद्धिमता के विभिन्न आयामों को समझकर एवं विकृत पुरुषत्व को पलटने के बारे में सुझाव प्रस्तुत किया जा सकता है।

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएँ तैयार की जाएंगी

1. पुरुषों में निजी जीवन के आयम में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की कमी है।
2. समाज सशक्त महिलाओं के साथ रहने के लिए पुरुषों को समाजीकरण के माध्यम से तैयार कर पाने में असमर्थ है।
3. भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं भावनात्मक समझ की पुरुषों में कमी होगी जो पारिवारिक असंतुलन एवं परिवार में टूट व विवाह – विच्छेद के प्रमुख कारण है।

4. समाज में लैंगिक समाजीकरण एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता सह–संबद्ध होगे–
   - पितृसत्तात्मक समाज में लैंगिक समाजीकरण एवं भावनात्मक बुद्धिमत्ता में सकारात्मक संबंध है।
   - भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं पारिवारिक समन्वय में सकारात्मक संबंध होंगे।
   - पितृसत्तामक समाज में लैंगिक समाजीकरण एवं पितृसत्तात्मक विलंबना में सकारात्मक संबंध है।

पद्धतिशास्त्र

अध्ययन पद्धति

प्रस्तावित अध्ययन का संपादन वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग से किया जाएगा। जो कि पूर्णतः अनुभवजन्य तथ्यों पर आधारित होगा।

प्रतिदर्श चयन

अध्ययन हेतु प्रतिदर्श का चयन स्तरित निदर्शन विधि की सहायता से झारखंड राज्य के रांची जिले के अंतर्गत किया जाएगा। प्रतिदर्श की कुल संख्या 200 होगी जिसमें स्त्री एवं पुरुषों का समान अनुपात में चयन किया जाएगा। सभी प्रतिदर्श रांची जिले के अंतर्गत विभिन्न संस्थानों में सलग्न कर्मी होंगे। जिन की आयु 21 से 55 वर्ष के बीच होगी।

प्रतिदर्श का वर्गीकरण

लिंग के आधार पर

- स्त्री - 100
- पुरुष – 100

पेशे के आधार पर

- वकील - 20
- मैरिज काउंसलर – 20
- मनोवैज्ञानिक एवं मनोचिकित्सक - 20
- बैंक में संलग्न कर्मी – 60
- शिक्षा के क्षेत्र में संलग्न कर्मी – 60
- विद्यार्थी– 20

रिनपास, सी.आई. पी. एवं संजीवनी रिलेशनशिप काउंसिलिंग जैसे कार्डसलिग एवं विशेषज्ञ संस्थानों में विशेष साक्षात्कार किए जाएंगे।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नांकित शोध उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा

गुणात्मक आंकड़ों का संग्रहण

गहन साक्षात्कार

उद्देश्यः स्त्री – पुरुषों का भावनाओं एवं लैंगिक समाजीकरण के अनुभवों, इसके संदर्भ में आने वाली कठिनाइयों और आकांक्षाओं का पता लगाना

प्रतिभागी – 30 प्रतिभागियों का गहन साक्षात्कार किया जाएगा।जो **काउंसलर और मैच मेकर आदि होंगे।**

संरचना – अर्द्ध संरचित साक्षात्कार के प्रयोग से खुले प्रश्नों का प्रयोग किया जाएगा ताकि लचीलेपन के साथ गहनतम आंकड़ों का संग्रहण किया जा सके।

भाषा– साक्षात्कार की भाषा यथासंभव सरल हिन्दी में होगी आवश्यकता पड़ने पर सरल अंग्रेजी का भी प्रयोग किया जाएगा।

केंद्रित समूह परिचर्चा

उद्देश्य – समाजीकरण के अनुभव, मनोवैज्ञानिक समस्याओं, आकांक्षाओं एवं चुनौतियों में लैंगिक भिन्नताओं के बारे में वृहद परिप्रेक्ष्य के निर्माण ।

प्रतिभागी – 5 केंद्रित समूह परिचर्चा, प्रत्येक में 10 प्रतिभागी सम्मिलित होंगे, जो विवाहित या प्रेमी जोड़े होंगे।

विषय–वस्तु – इन सामूहिक परिचर्चाओं की विषय–वस्तु भावनात्मक अभिव्यक्ति की समस्या, मानसिक स्वास्थ्य, परिवार के प्रकार्य, दुष्प्रकार्य, समाजीकरण के प्रतिमानों की समस्या होगी।

विश्लेषण

प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सांख्यिकीय विश्लेषण का उपयोग किया जाएगा। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संदर्भ में किया जाएगा । परिणामों को ग्राफिकल रूप में प्रस्तुत किया जाएगा ।

गुणात्मक आंकड़ा विश्लेषण

विषयगत विश्लेषण – गुणात्मक आंकड़े जो साक्षात्कार, एवं केंद्रित समूह चर्चा एवं अवलोकना से प्राप्त होंगे, का विश्लेषण एवं आवृत प्रतिमान, विषय एवं कृष्टिकोण।

वर्णनात्मक विश्वेषण – उत्तरदाताओं के कहानियों, अनुभवो, जीवनचरित्र चर्चा–परिचर्चा के विश्लेषण को समाजीकरण के सामाजिक सांस्कृतिक प्रष्ठिभूमि के साथ समझना।

सॉफ्टवेयर – गुणात्मक आकड़ो के संग्रहण एवं प्रबंधन के लिए उपयुक्त सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया जाएगा।

<u>अध्ययन की सीमाएं</u>

मनौवैज्ञानिक समस्याओं की चर्चा

भारतीय सामाजिक संदर्भ में मनोवैज्ञानिक समस्यायो की चर्चा करना एवं इससे संबंधित जानकारी निकालना कठिन है।

अभिनति की समस्या

उत्तरदाताओं के द्वारा आंकड़ों की गलत जानकारी प्रदान की जाने की संभावना है । प्रतिप्रश्नों द्वारा आंकड़ों की शुद्धि एवं पुष्टि

सूचना संपादन में पूर्वाग्रह

सूचना संपादन में पूर्वाग्रह की संभावमा उच्च है। खासकर सर्वे व साक्षात्कार के आंकड़ों के संग्रहण में। प्रतिप्रश्नों की सहायता से पूर्वाग्रह को दूर करने में सहायता मिलेगी। साथ ही गहन अवलोकन एवं द्वितीयक आंकड़ों की सहायता से पूर्वाग्रह को कम किया जा सकता है।

<u>प्रक्रिया</u>

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संग्रह में अग्रांकित प्रक्रिया का प्रयोग किया जाएगा। प्रत्येक सहमत उत्तरदाता से व्यक्तिगत जानकारी देकर प्राथमिक तथ्य प्राप्त किए जाएंगे। आंकड़े संग्रह की अवधि 120 दिनों तक की होगी। शोधकर्ता सभी आंकड़े व्यक्तिगत रूप से प्राप्त करेंगे जिसके लिए आवश्यक महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, बैंक एवं अन्य संस्थानो आदि का व्यक्तिगत दौरा करेंगे। शोधकर्ता शोध के प्रशासन एवं विस्तार के लिए आवश्यकता के अनुसार संस्थानों के प्रशासनिक प्रमुख की अनुमति लेंगे और तारीखें तय करेंगे। निर्धारित तिथि पर शोधकर्ता उत्तरदाताओं से मिलेंगे और उन्हें शोध का उद्देश् स्पष्ट करेंगे। शोधकर्ता द्वारा संस्थानों को समझाया जाएगा और शंकाओं का समाधान किया जाएखा। कुछ स्थितियों में जहां संस्थानों के शामिल होने की स्थिति नहीं होगी यथा असंगठित क्षेत्रो में संलग्न लोगों से आंकड़े संकलित करने में, सभी शोध उद्देदेश्य एवं प्राप्त आंकड़ों के प्रयोग, शंकाओं आदि का समाधान कर उत्तरदाताओं से सीधे तौर पर प्रत्यक्ष रूप में शोधकर्ता करेंगे। उन्हें आश्वस्त किया जाएगा कि

उनके जवाबों का प्रयोग केवल शोध उद्देश्य के लिए किया जाएगा और उन्हें गोपनीय भी रखा जाएगा।

अध्ययन का महत्व

भावनाओं की समझ एवं अभिव्यक्ति मानव को सभी प्राणियों से श्रेष्ठ बनाती है। भावनाएं हमारे निजी, पारिवारिक, सामाजिक एवं पेशेवर जीवन को संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पितृसत्तात्मक समाज में समाजीकरण के क्रम में पुरुषों में जो भी मानवीय भावनाएं हैं जैसे– दया, प्रम, करुणा, सहानुभूति, आदि का दमन किया जाता है ताकि वे मजबूत बनें। किंतु इन भावनाओं के दमन से उनमें विकृत पुरुषता, पुरुष अहं व भावशुन्यता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जो उनके निजी, पारिवारिक सामाजिक एवं पेशेवर जीवन को प्रभावित करती है। वे अन्य महिलाओं के साथ सम्मानीय व्यवहार करने में कतराते है, भावनाओ को अभिव्यक्त करने में असमर्थ महसूस करते हैं तथा कई बार भावों को सही तरीके से व्यक्त नहीं कर पाते है यह सब उन्हें स्त्री की भांति महसूस कराता है। जहां स्त्रियां पुरुषों के परंपरागत क्षेत्र में यानि आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्र में अपनी पकड़ बना चुकी है तब उन्हें परंपरागत स्वरूप की भांति एक पुरुष से सिर्फ वैसे घर व वस्त्र की चाह नहीं होती वे चाहती हैं कि पुरुष उनके भावो को समझें जो कि पुरुष वास्तव में सीख ही नहीं पात है इस कारण पितृसत्तात्मक समाज में एक सशक्त महिला तो उत्पन्न हो जाती है किंतु हम पुरुषों को इस योग्य नहीं बना पा रहे हैं कि वे सशक्त महिला के साथ रह पाए, इसे 'पितृसत्तात्मक विलंबना' कहा जा सकता है जो बढ़ते विवाह–विच्छेद, अवसाद, तनाव, दमन एवं हिंसा का कारण बन रहा है।

प्रस्तुत अध्ययन झारखंड राज्य के रांची जिले में लैंगिक समाजीकरण के बदलते प्रतिमानो का भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास का भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य, निजी, पारिवारिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत जीवन पर इसके प्रभाव का अध्ययन करने का एक प्रयास है।

समाज की वर्तमान समस्या और आवश्यकताओं से प्रासंगिकता

प्रस्तुत अध्ययन में पुरुषो से संबंधित एक महत्वपूर्ण विषय शामिल किया गया है। चूंकि भावनाएं मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को नियंत्रित करती हैं। इसलिए पुरुषों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का होना आवश्यक है। क्योंकि भावनात्मक बुद्धिमत्ता ही व्यक्ति में भावनाओं की समझ अभिव्यक्ति को नियंत्रित करती है, तय करती है कि व्यक्ति दूसरों की भावनाओं को कितने अच्छे से समझ पाएगा, कितने अच्छे से व्यक्त करेगा तथा दूसरों की भावनाओं को कितना महत्व दे पाएगा। भावनात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति ही दूसरों क दृ ष्टिकोण को भली भांति समझकर उसका सम्मान कर सकता है। वह तनाव की स्थितियों में भी व्यवहार कुशल बना रह सकता है क्या सशक्त होते हुए भी स्वयं से कमजोर लोगों का सम्मान करते हुए समस्याओ के नवाचार युक्त समाधान ढूंढ सकता है।

भावनात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति निजी , पारिवारिक, एवं सामाजिक जीवन को संतुलित रखते हुए अपनी अपने अस्तित्व को पृथक रख सकता है। भावनाओं की उचित अभिव्यक्ति द्वारा अपने पारिवारिक जीवन में भी तनाव कम कर सकता है बिना हिंसा किए अपनी बात रख सकता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता पुरुषो के जीवन में उत्पादकता व जीवन के स्तर का भी नियमन करती

है। यह अध्ययन पुरुषो के भावनात्मक स्वरूप समझने में सहायता करती है तथा विषाक्त पुरुषत्व को संतुलित करने, पुरुष अहं को समाप्त करने या नियंत्रित करने के उपायों को खोजने का प्रयास करती है। इन सबमें स्त्रियों की भूमिका व इन सबका स्त्रियों पर प्रभाव का मी अध्ययन करने का प्रयास करती है। प्रस्तावित अध्ययन पारिवारिक अप्रकार्यात्मकता एवं विवाह विच्छेद के भावनात्मक पक्ष को समझने का प्रयास करेगा। प्रस्तावित अध्ययन समाज के उत्थान एवं संतुलन के लिए प्रासंगिक है।

मौजूदा ज्ञान और भविष्य के कार्य में योगदान

भारत में समाजीकरण के लैंगिक प्रतिमानों के नकारात्मंक प्रभाव विशेषतः भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं भावनात्मक परिपक्वता के संदर्भ में अध्ययन बहुत कम हुए हैं। अधिकांश अध्ययन महिलाओं पर ही केंद्रित रहे हैं। यह शोध इनके बीच के संबंधों को जानने में सहायक बनेगा साथ ही साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता में कमी एवं इसके नकारात्मक परिणामों को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। यह शोध नए और अन्य शोधकर्ताओं को इस विषय पर चर को शामिल या छोड़कर अपने अध्ययन करने में सहायता प्रदान करेगा। यह शोध बड़ी संख्या में प्रतिदर्श पर भी किया जा सकता है।

संभावित अध्याय

पहला अध्याय

- विषय का परिचय
- पूर्व साहित्यों की समीक्षा
- अध्ययन के उद्देश्य
- प्राकल्पना

दूसरा अध्याय

- अध्ययन क्षेत्र का परिचय
- शोध पद्धतिशास्त्र
- शोध प्रक्रिया

तीसरा अध्याय

- लैंगिक समाजीकरण के बदलते प्रतिमानों का पारिवारिक एवं सामाजिक संरचनाओ पर प्रभाव

चौथा अध्याय

- सामाजिक कारको एवं लैंगिक समाजीकरण का भावनात्मक बुधिमत्ता पर प्रभाव

पांचवा अध्याय

- निष्कर्ष, एवं सुझाव

परिशिष्ट

नोट – यह शोध संक्षीप्तिका वास्तविक शोध की एक अस्थायी संस्चना है, प्राप्ति आकड़ों की प्रकृति के आधार पर इसने सूक्ष्म संशोधन किए जा सकते हैं।

संदर्भ

- अजीज आथत, गोयल कशिश (2020), द इम्पैक्ट ऑफ पेट्री आर्की ऑन मेंटल हेल्थ एण्ड फिजिकल वेल बिडंग इन इण्डिया विद कश्मीर एस ए केस स्टडी, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ पॉलिसी साइंस एण्ड लॉ
- अमीन अवनी, कगेस्टेन अन्ना, अदेबायो एमैनुएल, मौली दी. सी. (2018) एड्रेसिंग जेंडर सोशलाइजेशन एंड मैस्कुलैनिटी नॉर्म्स अमंग एडोलेसेंट बायज, पॉलिसी एंड प्रोग्रामिटिक इम्प्लीकेशन्स, जर्नल ऑफ एडॉलसेंट हेल्थ 62(3), 53–55] 2018
- चेरनिस वेरी (2010), इमोशनल इंटेलीजेंस : दूवर्ड क्लेरिफिकेशन ऑक ए कॉन्सेप्ट सोसायटी ऑफ इन्डस्ट्रीयल एंड ऑर्गेनाईजेशन – नल साइकोलॉजी, यूएस
- सियरोंच्वी जोसेफ, हायन्स केरेन्स, क्रिट्टेनडेन नाडिया (2005) कैन मेन इ बेटर इक दे ट्राय हार्डर : सेक्स एण्ड मोटिवेशनल इफेक्ट्स ऑन इमोशनल अवेयरनेस, साइकोलॉजी प्रेस टायलट एंड क्रोसिस ग्रुप
- क्रेट एम ई., गेल्डर (2012), ए रिव्यू ऑन सेक्स डिफरेंसेस इन प्रोसेसिंग इमोशनल सिग्नलस, न्यूरोसाइकोलॉजीया
- डेविस एम एच ए. (1980), ए मल्टी डायमेश्नल अप्रोच दू इंडिविडुअल डिफरेंशेस इन इम्पैथी, जे.एस.ए.एस कैटलॉग ऑफ सेलेक्टेड डॉक्यूमेंट्स इन साइकोलॉजी, टेक्सास
- डे. एल. अरला, कैरल एस.ए. (२००५), युसिंग एन एबिलिटी बेस्ड मेस मेसर ऑफ इमोशनल इन्टेलिजेंस टू प्रिटिक्ट इन्डीविडुअल परफॉर्मेंस एंड ग्रुप सिटिजनशिप बिहेवियर्स, पर्सनैलिटि एंड इन्डीविडुअल डिफरेंसेस इश्यू 6 पी. 1443–1458
- फिश्चर एच. एग्नेटा, क्रेट ई, मारिस्का, ब्रोइकेन्स जुस्ट (2018), जेंडर डिफरेंसेज इन इमोशन परसेप्शन एंड सेल्फ. रिपोर्टड इमोशनल इंटेलिजेंसः ए टेस्ट ऑफ द इमोशन सेन्सीटिविटी हाइपोथ्येसिस, नेग्नल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन (यूएसए)
- फिश्चर ए. एच. (1993), सेक्स डिफरेंस इन इमोशनलीटिः फैक्ट और स्टीरियोटाइप?, फेमिनिज्म एण्ड साइकोलॉजी
- फिओरी मरिना, एग्नाली सेरजिओ, डेविस एस. के. (2023), इडीटोरिअल : न्यू ट्रेंड इन इमोशनल इन्टेलिजेंस : कॉन्सेप्चुअलाजेशन, अण्डरस्टैंडिंग एंड असेसमेंट क्रंटियर इन साइकोलॉजी
- गुन्केल मरजाना, शेळगल क्रिस्टोफर, एन्जल रॉबर्ट – (2014). कल्पर्स इन्फ्यूएन्स ऑन इमोशनल इन्टेलिजेंसः एन एम्पेरिकल स्टडी ऑफ नाइन कन्ट्रीस, जर्नल ऑक – इन्टरनेश्नल मैनेजमेंट इश्यू 2 पीः 256–274

- गुप्ता मयंक मुदाबुशी जे. एस., गुप्ता निहित (2023), क्रिटिकल ओवरव्यू ऑफ पेट्रीआकर्की, इट्स इंटरफेरसेंस विद साइकोलॉजीकल डेवलपमेंट, एंड रिस्क फॉर मेंटल हेल्थ, क्यूरस पब्लिशिंग बियोंड ओपन एक्सेस नेशनल लाइब्रेरी ऑक मेडिसिन, यूएसए
- गुप्ता एम. एल, शर्मा डी.डी., (2022) समाजशास्त्र, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा
- गोलमैन डेनियल (1998) वर्किंग विद इमोशनल इन्टेलिजेंस ब्यूम्सबरी पब्लिकेशन, न्यूयॉर्क, अमेरिका
- हॉल जे. ए. (1978), जेंडर इफेक्टस इन डिकोडिंग नॉन वर्बल क्यूस, साइकोलॉजीकल बुलेटिन
- हॉल जे. ए. (1984), नॉन वर्बल सेक्स डिफरेंस : कम्यूनिकेशन एक्यूरेसी एण्ड एक्प्रेसिव स्टाइल, जॉन हॉपकिंस यूनिवर्सिटी प्रेस
- जॉन ए. नीतू, स्टॉवेन्यू फ्रिस्टेन, रिट्टर समांथा, एडसीउस जैकी, वालविन निकोल (2017), जेंडर सोशियलाइजेशन इयुरिंग एडॉलसेंस इन लो. एंड मिडिल इनकम कंट्रीज कोकोटूराजेशन, इन्फ्लूएन्सेस एंड आउटकम्स, इन्टरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वुमेन, यूनिसेक ऑफिस ऑफ रिसर्च, इनोसेंटी डिस्कसन पेपर–2017
- बिकृष्णन जी. गोकिला, अर्जुन अनधा, स्मृति (2020) मेन इन ए पेट्री अर्ककल सोसाइटी एंड इस्यूज, इंटरनेशनल जर्नल अफ एडवांसड रिसर्च इन इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी (आइ एई एम ई पब्लिकेशन)
- मेकक्लुर ई.बी. (2000), ए मेटा एनालिटिक रिव्यु ऑफ सेक्स डिफरेसस इन फेशियल एक्प्रेशन प्रोसेसिंग एंड देयर डेवेलपमेंट इन इन्फैंटस, चिल्ड्रेन एण्ड एडोलसेंप, साइकोलॉनिकल बुलेटिन
- मेयर डी.जे. करूसो डी.आर, सालोनी पीटर (1999), इमोशनल इन्टेलीजेंस मिट्स ट्रेडीशनल स्टैण्डर्स फॉट एन इन्टेलिजेंस, इन्टेलिजेस साइंस डाइरेक्ट, इश्यू पी. 267 – 298
- म्यूथेल मरियम, होंगेल मार्टिन (2010), कल्वरल एंड सोसाइटल इन्फ्लूएन्स ऑन शेयरड लिडरशिप इन ग्लोवली जर्नल ऑक इन्टरनेशनल मैनेजमेंट
- जुनेज सांचेज, फर्नाडीज पाब्लो, मौटेनेस जुआन, लेटोर निरुप (2008) इजइमोशनल इन्टेलीजेंस डिपेंड ऑन जेंडर 7द सोशियलाइजेशन ऑफ इमोशनल कॉम्पेटेंसिज इन मेन एंड विमेन एंड इट्स इम्पीकेशन, इलेक्ट्रॉनिक जर्नल ऑफ रिसर्च इन एजुकेशनल साइकोलॉजी, v6 nz, पी 455–479
- पाण्डे ममता शर्मा दीप्ति (2024) रिसर्च आन इमोशनका इन्टेइण्डीयन टीचर्सः ए सिस्टमेटिक एनालिसिस ऑफ इट्स रिलेशन विद हल्य पैरामिटर्स एंड इम्पैक्ट ऑफ जेंडर, नेशनल लाइब्रेरी सॉफ मेडिमिन यूएसए
- पाण्डे, एस एल (2009), समाजशास्त्र, टाटा मैकयो हिल्स, नई दिल्ली
- रावत हरेकृष्णा (2015) उच्चतर समाजशास्त्र विश्वकोश, रावत पब्लिकेसन, जयपुर

- सालगुएरों जे.एम., एक्स्ट्रमेरा नतालियो, कनर्नांडीज पाब्लो (2012) इमोशनल इन्टेलीजेंस एंड डिप्रेशन : द मॉडरेटर रोल ऑफ जेंडर , पर्सनैलिटी एंड इंडीविडुअल डिफरेंसेस, वी 53, आई1 पी. 29 – 32 (साइंस डाइरेक्ट)
- श्रीवास्तव कल्पना, जोशी सौम्या, रायचौधुरी अर्कज्योति (2011) इमोशनल इन्टेलिजेंस स्केल फॉर मेडिकल स्टुडेंटाए इंडस्ट्रीयल साइकेट्री जर्नल इंडिया
- सुलैमान मोहम्मद, कुमार दिनेश (2017) मनोविज्ञान और सामाजिक समस्याएँ, मोतीलाल बनारसीदास, पटना
- सिंह अरुण कुमार (2013), संज्ञानात्मक भनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, पटना
- सेराविन ओक्टाविआमा, किल्लिंग इन्दा योवन, मेग सी एम (2023), – द इम्पैक्ट ऑफ पेट्रीआकेल कल्चर ऑन टॉक्सिक मेंस्कुलानिटी इन जेनेरेशन जी इन इस्ट नुसा टैग्गरा
- सिंह डी. **(2002)** इमोशनल इन्टेलीजेंस एटवर्क : ए प्रोफेशनल गाण्ड सेज पब्लीकेशन, न्यू दिल्ली, इंडिया
- कांग टी (2018) रिलेशनशिप ऑफ इमोशनल इंटेलीजेंस ओक्यूपेशनल स्ट्रेस अकॉस जेंडर एंड डेसिग्नेशन, जर्नल ऑक हेल्थ एण्ड वेलबिइंग
- त्रिपाठी मीना (2016) इमोशनल इन्टेलीजेंस एंड जेंडर डिक्करसेस जर्नल ग्लोबल वैल्यूज
- उलु एकेन एलिफ, उकार सेमरा (2021), जंडर रोल्स, पर्सनैलिटी ट्रेट्स एंड एक्पेक्टेशन्स ऑफ वुर्मन एंड मेन दवईस मैरेज एजुकेशनल पॉलिसी एनालायसिस एंड स्ट्रैटेजिक रिसर्च, वि 16, एन 1, पी 7–20, तुर्की